जो मोमिन बिने पांच अर्स में, सो होत बंदगी बातन।
जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन।। ७२ ।।

मोमिनों के पांच नियम बातूनी हैं। यह परमधाम के वास्ते होते हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने जैसे आदेश होता है वैसा ही इस संसार में मोमिनों का तन करता है।

दिल अर्स हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन।। ७३ ।।

मोमिनों का दिल हकीकी इसलिए कहा है कि इनके मूल तन परमधाम में श्री राजजी महाराज के चरणों के तले बैठे हैं। रसूल साहब भी इन्हें बार-बार खुदा की उम्मत इसलिए कहते हैं कि मोमिन परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले मूल-मिलावे में बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें मेहेर करी तुम पर।
भुलाए तुमें हांसीय को, वास्ते इस्क खातिर।। ७४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे ऊपर कृपा की है और इश्क की लज्जत देने के वास्ते तुम्हें खुद भुला रखा है ताकि तुम पर हांसी कर सकें।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || ३३८ ||

भिस्त सिफायत का बेवरा

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत।
दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत।। १ ।।

मोमिन परमधाम से आए हैं, इसलिए हम मोमिनों की निसबत (सम्बन्ध) श्री राजजी महाराज से है। श्री राजजी महाराज ने अखण्ड घर परमधाम की न्यामत (जागृत बुद्धि की तारतम वाणी) इनको दी है।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए।
अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए।। २ ।।

जागृत बुद्धि तारतम वाणी की यही पहचान है कि इससे कोई बात उनसे छिपी नहीं रह सकती। यह वाणी अखण्ड घर (परमधाम), रूहें, ईश्वरी सृष्टि, सबकी करनी और रहनी तथा ठिकानों की पहचान कराती है।

कहूं नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दई पेहेचान।
रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं ले माएने फुरमान।। ३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुझे जो पहचान दी है उससे मैं थोड़ा दुनियां की हकीकत का बयान करती हूं। मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी महारानी के तारतम ज्ञान की ही कृपा से कुरान के छिपे भेदों को जाहिर कर रही हूं।

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत।। ४ ।।

यह सृष्टि जो 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है उन पर शरीयत के नियम लागू किए गए हैं। उन जीवों में से जो तरीकत अर्थात् उपासना की भक्ति करते हैं, वह बैकुण्ठ या निराकार तक जाते हैं।

Nijanand App

जो लग्या वजूद को, ताए छूटे न जिमी नासूत।
पुलसरात को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत।।५।।

जो अपने शरीर की ही सेवा में लगा रहता है उससे मृत्युलोक नहीं छूटता। जीवसृष्टि जो कर्मकाण्ड तलवार जैसी धार का रास्ता है, उस पर चल नहीं सकेगी और वह बैकुण्ठ कैसे जा सकतीं?

ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन।
सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन।।६।।

इस संसार के जितने आदमी हैं चाहे देवलोक के देव या भुवर्लोक के जिन्न या भूत वह सब वजूद से जाहिरी बन्दगी करते हैं और बातूनी रहस्यों को नहीं समझते।

जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन।
सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत बिन।।७।।

जो अक्षर-धाम का होगा, अर्थात् ईश्वरीसृष्टि जिनका धाम अखण्ड है, वह वजूद की बन्दगी नहीं करेंगे। वह यथार्थ (हकीकत) का ज्ञान लिए बिना अपने घर नहीं लौट सकते।

जो होवे अर्स अजीम की, सो ले हकीकत मारफत।
इनको इस्क मुतलक, जिन रूह हक निसबत।।८।।

जो अर्श अजीम (परमधाम) के हैं वह हकीकत और मारफत के वचनों से पहचान करेंगी और जिनका श्री राजजी महाराज से सम्बन्ध है वह बिलकुल प्रेम के ही स्वरूप हैं।

रूहें फरिस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान।
एक इस्क दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान।।९।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो जमातें हैं। इनके दो ठिकाने परमधाम और अक्षरधाम हैं। रूह इश्क लेकर परमधाम जाएगी और ईश्वरीसृष्टि बन्दगी से अक्षरधाम जाएगी। दोनों ही अपने-अपने रास्ते को पहचान कर चलेंगी।

उतरी रूहें फरिस्ते लैल में, अपने रब के इजन।
दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन।।१०।।

रूहें और ईश्वरीसृष्टि खुदा के हुकम से लैल में उतरी हैं। यह श्री राजजी महाराज के हुकम से सबों को अखण्ड करके मारफत के ज्ञान से पहचान कर अपने घर जाएंगी।

भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखिर।
ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर।।११।।

चार बहिश्तें कायम हो गई हैं और आखिर तक चार और होकर, आठ हो जाएंगी। हे मोमिनो! इसकी हकीकत भी विचार कर देखो और सुनो।

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त।
दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित।।१२।।

जो चार बहिश्तें कायम हो गई हैं उनमें एक देवी-देवताओं की बहिश्त है जो अव्याकृत में ऊपर से छठे नम्बर की है। रास और बृज की दो बहिश्तें जो लैल की रात्रि के पहली दो लीलाओं की है, वह सबलिक ब्रह्म में चार और पांच नम्बर पर हैं। चौथी बहिश्त मुहम्मदी ऊपर से तीन नम्बर पर सबलिक ब्रह्म में है (यह तीन बहिश्तें सबलिक में हैं ३-४-५)

Nijanand App

आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार।
जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार।। १३ ।।

आखिर के समय में जो चार बहिश्तें कायम होंगी उनकी भी हकीकत बताती हूं।

भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई।
भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही।। १४ ।।

सबसे ऊपर सत् स्वरूप ब्रह्म में ब्रह्मसृष्टि के जीवों को अखण्ड किया जाएगा जो पहली नम्बर एक की बहिश्त होगी। नम्बर दो पर जो नई बहिश्त बनेगी वह ईश्वरीसृष्टि की होगी जो जमात अक्षरधाम से आई है।

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम।
चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम।। १५ ।।

पैगम्बरों की बहिश्त जिन्होंने पारब्रह्म का पैगाम दिया है वह उनकी तीसरी बहिश्त अव्याकृत में नम्बर सात पर होगी। चौथी बहिश्त सारी दुनियां के जीवों की, आठवीं बहिश्त अव्याकृत में आम खलक की बहिश्त होगी।

नोट—इस तरह से नम्बर एक, दो, सात और आठ, अर्थात् चार नई बहिश्तें आखिर समय कायम होनी हैं।

जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत।
भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत।। १६ ।।

जो हक की राह पर चलकर सच्चे दिल से कर्मकाण्ड पर चले उनको तीसरी बहिश्त जो नई कायम होनी है और नम्बर उसका सातवां अव्याकृत होगा। ऐसे लोगों को न्याय के समय में दोजख की अग्नि में नहीं जलना पड़ेगा।

जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले।
सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए।। १७ ।।

जो सच्चा ज्ञान न लेकर शरीयत को ही पकड़े रहे उन्हें आखिर के समय दोजख की अग्नि में जलकर चौथी जिसका नम्बर आठ होगा अव्याकृत में आम खलक की बहिश्त मिलेगी।

रूहों अक्स कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन।
सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन।। १८ ।।

रूहों के अक्स (जीव) नम्बर एक सत् स्वरूप ब्रह्म में अखण्ड होंगे। यह वही रूहें हैं जो परमधाम में रहने वाली हैं और कयामत के समय अपने घर परमधाम में अपने तनों में खड़ी हो जाएंगी।

जोलों अपनी राह पावें नहीं, तोलों पोहोंचे ना अपने मकान।
हादी हद्दों हिदायत करके, आखिर पोहोंचावें निदान।। १९ ।।

जब तक संसार के जीव अपना-अपना रास्ता तारतम वाणी से नहीं पा लेंगे तब तक अपने ठिकाने पर नहीं पहुंच सकेंगे। हादी श्री प्राणनाथजी महाराज सबको सबके ठिकाने बताकर उनके ठिकाने पहुंचा देंगे।

Nijanand App

अब कहूं सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे।
नेक सुनो सो बेवरा, देऊं रूहों को बताए।। २० ।।

अब आखिरी वक्त में मुहम्मद साहब किसकी सिफारिश करेंगे उसकी हकीकत भी रूहों को बता देती हूं। उसका भी थोड़ा सा विवरण सुनो।

जित पोहोंची सिफायत महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे।
सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे।। २१ ।।

मुहम्मद साहब जिसकी सिफारिश कर देंगे वह तुरन्त ही दुनियां को पीठ देकर मुहम्मद की तीसरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी की शरण में पहुंच जाएगा।

जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत।
सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत।। २२ ।।

जिन्होंने हकीकत, मारफत को नहीं पहचाना और दुनियां को नहीं छोड़ा उनकी सिफारिश मुहम्मद नहीं करेंगे और वह अखण्ड घर परमधाम में भी नहीं आ सकते।

जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें।
महंमद सिफायत लई मोमिनों, जाकी रूह बका अर्स माहें।। २३ ।।

जो दुनियां के सुखों में लगे रहे उन्हें अखण्ड घर परमधाम की सुध नहीं है। मुहम्मद साहब की सिफत मोमिनों ने ही ली जिनकी परआतम परमधाम में है।

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर।
हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर।। २४ ।।

परमधाम का सुख लो या दुनियां का सुख लो। दोनों सुख एक ठिकाने नहीं मिलते। झूठ के बदले जिन्होंने अखण्ड सुख को छोड़ दिया उन्होंने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की वाणी को नहीं सुना।

दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए।
फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए।। २५ ।।

दुनियां के जीव अपनी चतुराई से दोनों सुख लेना चाहते हैं और पारब्रह्म श्री राजजी महाराज को धोखा देना चाहते हैं, इसलिए अपनी प्यारी उम्र को यू ही गंवा देते हैं।

सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत।
छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत।। २६ ।।

जिन्होंने सच्ची हकीकत को नहीं लिया उनको मोमिन कैसे कहा जाए? जो संसार के माया-मोह को नहीं छोड़ सके, इसलिए उन्हें अखण्ड परमधाम के सच्चे सुख नहीं मिले।

चौदे तबक नबी के नूर से, सो सब कहें हम मोमिन।
सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अर्स रोसन।। २७ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड अक्षर के नूर (मुहम्मद के नूर) से बना है, इसीलिए सब मुसलमान कहते हैं कि हम मोमिन हैं। मोमिन वही हैं जिसको किसी प्रकार का संशय नहीं रहता। उसे श्री राजजी महाराज और अखण्ड घर (परमधाम) का ज्ञान प्राप्त होता है।

Nijanand App

सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम।
ले हकीकत पोहोंचे अर्स में, जिन सिर लिया महंमद हुकम।। २८ ।।

सभी धर्म सम्प्रदाय वाले अपने-अपने धर्म-ग्रन्थ लेकर खोज करते हैं और कहते हैं कि हम ही पारब्रह्म के चरणों के तले खड़े हैं, परन्तु जिन्होंने श्री प्राणनाथजी के हुकम को सिर पर धारण किया वह सच्चे ज्ञान (जागृत बुद्धि के ज्ञान) को लेकर सीधे परमधाम पहुंचे।

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक।
कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक।। २९ ।।

जिनकी रसूल साहब ने सिफारिश कर दी उन्होंने बिल्कुल ही दुनियां को छोड़ दिया और श्री प्राणनाथजी के बताए रास्ते पर चलकर अखण्ड घर परमधाम पहुंचे।

हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक।
जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक।। ३० ।।

हकीकत और मारफत के ज्ञान की बातें बारीक हैं। जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की सिफारिश नहीं ली वह रूढ़िवादी रास्ते पर ही लड़ झगड़ कर चलते रहे।

तरक करे सब दुनी को, कछू रखे न हक बिन।
वजूद को भी महे करे, ए महंमद सिफायत मोमिन।। ३१ ।।

जो दुनियां को बिल्कुल छोड़ दें और पारब्रह्म के बिना उनके जीवन में और कुछ न हो और तन को भी कुर्बान करें उन्हें ही श्री प्राणनाथजी की सिफायत मिलेगी और वही अर्श मोमिन कहलाएंगे।

कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई।
धरें आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी में रोसनाई।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि खुदा ने मुझे जो ज्ञान दिया उसकी खबर मेरे भाई मोमिनों को है। ऐसी मोमिन ही कदमों पर कदम रखकर श्री प्राणनाथजी की राह पर चलेंगे और उनके अन्दर अज्ञानता मिटकर तारतम वाणी का उजाला होगा।

महंमद एही सिफायत, अर्स बका हक रोसन।
जो अर्स अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमिन।। ३३ ।।

श्री प्राणनाथजी की खास पहचान ही यह है कि उन्होंने ही आकर परमधाम श्री राजजी महाराज और मोमिनों को दुनियां में जाहिर किया और यदि इस पर परमधाम के मोमिनों को शक रहता है तो उसे परमधाम की ब्रह्मसृष्टि नहीं कहना चाहिए।

जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात।
देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात।। ३४ ।।

जो परमधाम के मोमिन हैं उनको परमधाम के कण-कण का ज्ञान है। यही श्री प्राणनाथजी की सिफायत है।

किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते।
जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए।। ३५ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी महाराज के ज्ञान को लिया है वही सब बताएंगे कि अर्श के मोमिन कौन हैं और ईश्वरीसृष्टि कौन है।

Nijanand App

इलम खुदाई लदुन्नी, सब असों की सुध तिन।
एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन।। ३६ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी महाराज की तारतम वाणी को समझा है उनको ही क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की पहचान है। उनको जरा भी संशय नहीं होगा।

अर्स रूहें सब बिध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर।
महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर।। ३७ ।।

परमधाम की रूहें परमधाम के हौज कौसर, पच्चीस पक्ष और जानवरों की शोभा, श्री प्राणनाथजी की वाणी के ज्ञान से, जर्रे-जर्रे की खबर मोमिनों को है।

जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली।
अर्स आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली।। ३८ ।।

जमुनाजी कहां से निकली हैं, कैसे आगे चलती हैं और परमधाम के आगे कितनी बहती हैं और अन्त में जाकर कहां मिलती हैं, इस बात की खबर श्री प्राणनाथजी के ज्ञान से मोमिनों को है।

क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए।
किन विध टापू बीच में, ए सब सुध मोमिन देवें बताए।। ३९ ।।

हौज कौसर तालाब कैसा है, कैसे घाट हैं, चारों तरफ पाल कैसे बनी है, बीच में टापू महल कैसे हैं, यह सब हकीकत मोमिन बता देंगे।

जोए अर्स के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्स के।
नूर अर्स की गलियां, अरस अरवा जानें ए।। ४० ।।

जमुनाजी परमधाम के किस तरफ हैं, हौज कौसर तालाब किस तरफ है, अर्श की नूरी गलियां कैसी हैं, यह सब परमधाम के मोमिन जानते हैं।

बारीक गलियां अर्स की, मोमिन भूलें न इत।
अरवा अर्स की रात दिन, याही में खेलत।। ४१ ।।

परमधाम की बारीक गलियों को मोमिन कभी नहीं भूलते। यह रात-दिन इसी में खेलते हैं।

जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान।
जोए हौज अर्स जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान।। ४२ ।।

जिनको श्री प्राणनाथजी के तारतम वाणी की पहचान हो गई है, उनकी यही पहचान है कि जमुनाजी, हौज कौसर तालाब, अर्श जमीन की कुल जानकारी उनके पास है।

नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर।
महंमद सिफायत जिनको, तिन से छिपी रहे क्यों कर।। ४३ ।।

श्री प्राणनाथजी की वाणी के ज्ञान से उन्हें परमधाम, अक्षरधाम की जमीन, बाग-बगीचे, जानवर सबकी जानकारी है और परमधाम की कोई बात छिपी नहीं है।

महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर।
सो देखो अर्स अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद का जहूर।। ४४ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से श्री श्यामा महारानी हैं और श्यामा महारानी के नूर से बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां हैं, इसीलिए परमधाम की रूहों को श्री प्राणनाथजी की वाणी की तुरन्त पहचान हो गई।

Nijanand App

हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन।
ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन।।४५।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां इस महल में खेलती हैं। वह हमेशा परमधाम में रहती हैं जहां सुन्दर हौज कौसर, जमुनाजी और बगीचे हैं।

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात।
तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात।।४६।।

परमधाम में मेवा, फल, फूल, पेड़, पत्ते जो चाहिए वह तुरन्त ही ले लीजिए, परन्तु बागों की तरफ देखें तो वहां भी जैसे के तैसे लगे दिखाई देते हैं, अर्थात् वहां कोई चीज नष्ट नहीं होती।

एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर।
कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर।।४७।।

जहां पशुओं का एक बाल नहीं गिरता, पक्षियों का एक पर नहीं गिरता, जहां के महल कभी पुराने नहीं होते, दिनों दिन और अच्छे ही दिखाई पड़ते हैं।

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए।
इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए।।४८।।

यहां कोई चीज नई नहीं होती, पुरानी नहीं होती, न कम होती है न ज्यादा होती है। यहां सब एक दिली है, अर्थात् एक नूर से है, इसलिए दूसरा किसी को कह नहीं सकते।

महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।
हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार।।४९।।

श्री प्राणनाथजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान जिन्होंने लिया वह यहां ही सावचेत हो गए और श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम का दर्शन यहीं मिल गया।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३८७ ।।

इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद।
मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, कुरान में और मुहम्मद साहब की हदीसों में जो कहा है उसका मैं बयान करती हूं। जो मोमिन होंगे, परमधाम के इन असली शब्दों को पहचानेंगे।

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन।
तिनको सारों ढूंढिया, सो एक न पाया किन।।२।।

जिस पारब्रह्म को वेद और कतेबों ने एक कहा है वह सबसे अलग रहा। उस एक को सबों ने ढूंढ़िया पर उस एक पारब्रह्म को कोई पा नहीं सका।

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।।३।।

सब धर्मग्रन्थ कहते हैं कि परमधाम एक है, किन्तु वह कहां है, किसी ने निश्चित ठिकाना नहीं बताया। सब कहते हैं कि हम ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर हमें नहीं मिला।

Nijanand App